Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-5, Nov-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

भारतवर्ष के कोने.कोने में गूँजती भक्ति के सुर लहरी

बीजू कुमार भागवती

सारांशः ईश्वर की आराधना के साथ संगीत का गहरा सम्बन्ध है। ऐसा भी कहा जाता है कि संगीत ईश्वर प्राप्ति का सबसे सहज और सरल मार्ग है। भारतीय संगीत का सदा ही ईश्वर.भक्ति से गहरा सम्बन्ध रहता आया है। भारतवर्ष के पूण्य.भूमि में ऐसे अनेक संगीतज्ञ एवं वाग्गेयकार पैदा हुए, जिन्होंने संगीत को मात्र एक कला की दृष्टि से नही, अपितु ईश्वर.प्राप्ति का भी उत्तम साधन मानकर उसे अपने जीवन का अनिवार्य अंग बना लिया। इन भक्त.संतों को निजानुभूति से यह दर्शन प्राप्त हुआ था कि भवसागर को पार करने के लिए तुम्बे का सहारा अनिवार्य है। प्रकाश से परम प्रकाश दिखाई देता है तथा रूप से ही परम रूप नजर आता है। तदत नाद ब्रह्म से ही परब्रह्म की प्राप्ति हो सकती है। विश्व के सभी भक्त तम्बूरे की नाव में ही बैठते थेः उसी तानपुरे की तान में तल्लीन होकर वे जो कुछ करते थे, उनके मुख से भाव की जो झरना निर्झरित होता था वह स्वयं कविता बन जाती थी और वही संगीत में परिवर्तित हो जाता था। बल्लभ, चैतन्य, सुर, मीरा, तुलसी, पुरंदरदास, भद्राचल रामदास, त्यागराज, तुकाराम, ज्ञानेश्वर नरसी, गोरख, हरिदास, जयदेव, विद्यापति, धर्मदास, नानक, मलुकदास, रैदास, दादु, सुन्दरदास, चरनदास, सहजोबाई, दयाबाई, शंकरदेव, माधवदेव, माधवकंडली इत्यादि संत.भक्तों ने स्वर और शब्द की चेतन शक्ति से ही भगवान का अनन्य प्रेम उपलब्ध किया, जन.जन को परम सत्य का संदेश दिया तथा भारतवर्श के कोने.कोने में भक्ति का अनन्य धारा प्रवाहित किया।

षब्द कुंजी : भक्ति संगीत, भक्ति आंदोलन, श्रीमंत शंकरदेव, बरगीत, रामप्रसाद सेन, श्यामा संगीत, तुलसीदास, महात्मा कबीर, अष्टसखायें, रास, गणगोर, शबद, संत ज्ञानेश्वर, समर्थ रामदास।

प्रस्तावनाः

विश्व के सभी प्रान्तों में समानरूपेण संगीत की व्यापकता पाई जाती है। भले ही स्थान अलग हो, परन्तु संगीत की मूलभूत भावना सभी जगहों में एक जैसी ही है और सदैव ही जनता को एकता के सूत्र में आबद्ध करती है। यह भी कह सकते है कि सभी स्थानों में व सभी सभ्यताओं में संगीत का जन्म भक्ति.भावना से हुआ है और इसी में उसका निरन्तर पल्लवन और विकास भी हुआ है। इन सभी का उद्देश्य अथवा लक्ष्य मनुश्य को सत्यमार्ग दिखाकर उसकी सांसारिक एवं अध्यात्मिक उन्नति करना है। इस सन्दर्भ में भारतवर्ष के भिन्न.भिन्न प्रान्तों, भिन्न. भिन्न भाषाओं के भक्त.कवियों और संगीत मनीशियों का योगदान, उनका प्रयास एवं संघर्ष उल्लेखनीय है, जिन्होंने अपने रसमय रचना से समस्त भारत को भक्ति. विभोर कर दिया था, जिन्होंने भक्ति में सगुण और निर्गुण ब्रह्म के दोनों रूपों को स्वीकार कर श्रवण.कीर्तन आदि से समाज की सोती हुई अध्यात्मिक क्रान्ति को सामूहिक रूप से जगाया और भक्ति.जागरण प्रवाहित किया।

असम

अति प्राचीन काल से ही असम प्रदेश में भक्ति.संगीत की अनुपम धारा प्रवाहित होती चली आ रही है। इस संगीत की धारा में शाक्त, शैव, वैष्णव व अन्य प्रकार के धार्मिक मान्यताओं का प्रमुख योगदान रहा। असम के प्राचीन ग्रन्थकारों ने शिवजी के नटराज रूप की कल्पना का विलोप करके उन्हें एक आर्य रूप प्रदान किया तथा जनजातीय लोगों के दैहिक गठनानुसार सजाने का प्रयास किया। उन साहित्यकारों ने शिवजी को भाँग का सेवन कर, भिक्षा मांगकर जीवन व्यतीत करनेवाला एक साधारण देवता अथवा 'बैरागी' के रूप में जनमानस में चित्रित किया। यहाँ के 'देहविचार गीत' नामक गीत में शिवजी को भिक्षा मांगनेवाला बैरागी के रूप में वर्णन किया गया है।

शिवजी के साथ.साथ असम में प्राचीन काल से ही माता शक्ति की पूजा का प्रचलन है। शक्ति.पूजा के साथ संगीत का भी प्रचलन रहा है, जिसका प्रमाण हमें यहाँ के लोक.संगीत में 'आईनाम', 'शीतला नाम' आदि धर्म.सम्बन्धी गीतों में मिलता है। माँ.शक्ति की विभिन्न रूपों में उपासना करने के लिए इन गीतों की रचना हुई अर्थात् उपासना प्रथा के साथ संगीत भी जुड़ा हुआ था। तांत्रिक युग में माँ कामाख्या को भी शक्ति रूप में ही पूजा जाता था। कालांतर में वैष्णव युग के शुरुआत के समय और भी धर्म.सम्बन्धी गीतों का प्रचलन रहा, जिनमें से 'मनसा गीत' प्रमुख है। इन गीतों को दुर्गावर कायस्थ, मनकर, पीताम्बर, सुकवि नारायण देव आदि कवियों ने रागों की आधार प्रदान कर रचना की थी।

महाराज विश्वसिंह (सन् 1515 ई.सन् 1540 ई) के राजदरबार के कवि दुर्गावर कायस्थ ने 'गीति.रामायण' एवं 'मनसा गीत' की रचना की। इन्होंने 'गीति. रामायण' के पदों को कौन से रागों में गाना चाहिए यह भी निश्चित किया। 'गीति. रामायण' में बहुत से रागों का उल्लेख मिलता है, जो असम के संगीत के इतिहास में शास्त्रीय संगीत के प्रचलन का निदर्शन स्वरूप है, जैसे, अहिर, आकाशमण्डली, गूज्जरी, सालनी, देवजिनी, देवमोहन, धनश्री, पटमंजरी, बरारी, बसंत, वलोवार (विलावल), भतियाली, मंजरी, मारोवार, मालसी (मालश्री), मेघमण्डल, रामगिरी, श्री गंधकलि, श्रीगंधार, सुहाई आदि।

प्राकशंकरी (अर्थात श्रीमंत शंकरदेव से पहले) कवियों में माधव कण्डली (तेरहवी से चौदहवी सदी के मध्य) के नाम लिए बिना यह लेख सम्पूर्ण नही माना जा सकता। इन्होंने बराही राज महामाणिक्य की अनुप्रेरणा से प्रांतीय आर्य भाषा में रामायण का अनुवाद किया था। माधव कण्डली के द्वारा अनुदित रामायण को भारतीय आर्य भाषा में सबसे पहले अनुवाद किया गया ग्रंथ माना जाता है, जिससे प्राचीन असम अथवा शंकरदेव के पूर्व के असम के संगीत के रूप के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी मिलती है।

आज के समय में असम प्रदेश में भक्ति आंदोलन कहने से श्रीमंत शंकरदेव और उनके शिष्य माधवदेव द्वारा प्रचारित वैष्णव धर्म के भक्ति को ही माना जाता है। इन दोनों महापुरुषों के भक्ति आंदोलन ने असम के समाज, साहित्य व संस्कृति को एक नवीन रूप प्रदान किया। इनके भक्ति आंदोलन के फलस्वरूप दो बातें सामने आती है . पहली, इनके द्वारा रचित भक्ति.साहित्य, जैसे, 'कीर्तन घोषा', 'दशम', 'भक्ति रत्नावली' आदि, एवं भक्ति.संगीत, अर्थात् भक्ति आंदोलन से सम्बन्धित गीत, नृत्य, नाट्य आदि, जिसमें 'बरगीत', 'सत्रीया नृत्य', 'अंकीया नाट' आदि प्रमुख है।

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित गीतों में 'बरगीत' प्रमुख है। बरगीतों में मुख्यतः भगवान श्रीकृष्ण के विश्वविमोहन बाल्यरूप का विवरण है। इनके शिष्य माधवदेव के बरगीतों में श्रीकृष्ण के ग्वालरूप, शिशुसुलभ क्रीड़ा.कौतुक आदि भावनाएँ मिलते है। बरगीतों में जहाँ एक ओर बालक कृष्ण की चचंलता का प्रकाश होता है, वहीं दूसरी ओर अध्यात्मिक भाव का गाम्भीर्य भी है। बरगीत, धर्म.सम्बन्धी गीत है। इनका प्रचलन पवित्र स्थानों में होता है और विशिष्ट लोग ही इन गीतों को गाते और सिखाते है। इन गीतों में कई रागों का उपयोग होता है, जैसे, आशोवारी, भाटियाली, तुड़ भाटियाली, सिंधुरा, बेलोवार, माहुर, कानाड़ा, भूपाली, श्री, धनश्री, गौरी, केदार, नटमल्लार, सुहाई, कौ, कल्याण, कामोद, अहिर आदि। इन गीतों में प्रयुक्त तालों के नाम है . एकताल, जतिताल, परिताल, रूपक, खरमान आदि।

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित बरगीतों में से राग आशोवारी में रचित एक बरगीत की एक पंक्ति निम्नवत् है .

ध्रुं . आनन्दे गोविन्दे बाय बृन्दावने वेणु

बीजू कुमार भागवती,"*भारतवर्ष के कोने.कोने में गूँजती भक्ति के सुर लहरी*"
Golden Research Thoughts Vol-3, Issue-5 (Nov 2013): Online & Print

Impact Factor : 1.9508(UIF)

रूपे भुवन भुले बहिया कदम्ब मूले,
कालिन्दीर तीरे राखे धेनु।।

इस बरगीत में श्रीकृष्ण के अनन्य बालरूप का वर्णन किया गया है।

इन सब गीतों के अतिरिक्त असम में अनेक प्रकार के लोक.गीतों का भी प्रचलन है, जिसमें भक्ति.भाव की झलक दिखाई पड़ती है। इन गीतों में 'आईनाम', 'देहविचार गीत', 'बैरागी गीत', 'शुकन्नानी गीत', 'टोकारी गीत', 'गोवालपरीया लोक.गीत', 'कामरुपी लोक.गीत' व आजान फकीर साहब द्वारा रचित असमिया मुसलमानों का धर्मीय गीत 'जिकिर' व 'जारी' आदि प्रमुख है।

बंगाल

बंगाल की पावन धरती में अनेक ऐसे संत.संगीतज्ञ पैदा हुए, जिन्होंने बंगाली संगीत को समृद्ध किया और अपने गीतों द्वारा जनसाधारण को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग दिखलाया। इन संतों में श्रीचैतन्य महाप्रभु का नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। सोलहवीं सदीं के इस महान समाज सुधारक ने भक्ति पुराण और श्रीमद्भागवत् गीता की आधार पर भक्ति.योग के वैष्णव पंथ की स्थापना की। श्रीचैतन्य भगवान श्रीकृश्ण के अनन्य भक्त थे। उनके द्वारा स्थापित पंथ के केन्द्र श्रीकृष्ण है और उनका धाम वृन्दावन है। उनके अनुसार श्रीकृष्ण की प्रेम.भक्ति ही जीव का परम लक्ष्य है और जिस साधनों से यह प्रेम की प्राप्ति होती है उनमें से एक है हरिनाम.कीर्तन। यह हरिनाम.कीर्तन, ''हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम् हरे राम्, राम् राम् हरे हरे।'' . विश्वभर में आज भी गूँजता है। श्रीचैतन्य देव के अतिरिक्त चंडीदास और विद्यापति के गीत भी संगीतमय थे, जो वहाँ के जनगण बड़े प्रेम से गाते थे।

उसीप्रकार, कृतिबास की उच्चकोटि की संगीतमय रचना रामायण को आज भी यहां बड़े श्रद्धापूर्वक गाई जाती है। रामायण की भांति महाभारत का भी बंगला संस्करण काफी लोकप्रिय रहा और आज भी है। इसके अतिरिक्त यहाँ 'मनसा मंगल' जैसे धार्मिक एवं पौराणिक ढंग के गीतों की भी रचना हुई।

देवी.देवताओं की पूजा का प्रचलन बंगाल में खूब है। इस संदर्भ में रामप्रसाद सेन का नाम उल्लेखनीय है। सतरहवीं सदीं के यह कवि.संगीतज्ञ द्वारा रचित गीतों को 'श्यामा संगीत' अथवा 'काली माता का गीत' कहा जाता है, जो उनके देवी की प्रति भावनात्मक अभिव्यक्ति की प्रतीक स्वरूप है। इन गीतों में कवि को माता के साथ प्रत्यक्ष वार्तालाप करते हुए चित्रित किया गया है .

चाई ना मागो राजा होते
राजा हबार साध ना मागो
दुबेला जेनो पाई माँ खेते
(माँ) आमार माटिर घरे बाँसेर खुटी
पाई जेनो ताई खर जोगाते
आमार माटिर घर जे सोनार घर माँ
ओ माँ कि होबे दालानेते कृ

इन महाकवियों एवं संत.संगीतज्ञों के अतिरिक्त अनेक ऐसे भक्त.कवि थे, जो पैदा तो बंगाल में ही हुए थे परन्तु उनके सुरमयी रचनायें आज भी भारतवर्ष के कोने.कोने में गूँजती हुई पायी जाती है। इन में से महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर प्रमुख है। वे एक कुशल संगीतज्ञ के साथ.साथ एक उच्चकोटि के कवि भी थे। युवावस्था में ही इन्होंने वैष्णव पदावली की रचना की। टैगोर के गीत 'रवीन्द्र संगीत' नाम से प्रसिद्ध है, जिनमें शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त बंगाली लोक.गीतों के अंतर्गत कीर्तन, भातियाली तथा बाउल गीत भी पाया जाता है।

उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश का भक्ति.संगीत अनेक कवियों तथा संगीतज्ञों की देन है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि संगीत के माध्यम से भक्ति गंगा की प्रवाह जितना इस प्रदेश में हुआ उतना किसी अन्य प्रदेशों में नहीं हुआ। अनेक कवि. संगीतज्ञ इस प्रदेश के पावन भूमि की पैदावर है, जिनकी संगीतमय कविताओं की सुर लहरी इस प्रदेश के भौगोलिक सीमा को लांघकर नगर.नगर, गावँ.गावँ, प्रदेश. प्रदेश में आज भी गूँज रही है। महाकवि तुलसीदास, स्वामी हरिदास, स्वामी रामानंद, मलुकदास, कबीरदास, ध्रुवदास, नरहरिदास तथा अष्टछाप के कवि सूरदास, नन्ददास, कुम्भनदास, चर्तुभूजदास, परमानंद दास, गोविन्द स्वामी, छीत स्वामी आदि भारतवर्ष के प्रमुख भक्त.कवियाँ उत्तर प्रदेश की ही देन है।

पन्द्रहवी सदीं के महाकवि तुलसीदास एक उच्चकोटि के संगीतज्ञ एवं कवि थे। उनके संगीतमय काव्य 'रामचरित मानस' ने भगवान राम के उज्ज्वल एवं पावन चरित्र की विभिन्न अभिव्यक्तियों को घर.घर पहुंचाया। इन्होंने भगवान राम को ईश्वर तथा स्वयं को उनका एक तुच्छ सेवक मानकर संगीतमय पदों एवं छन्दों में उनका गुणगान किया, जो आज भी घर.घर में बड़े प्रेम से गाया एवं सुना जाता है।

महात्मा कबीर के संगीत ने जन.जीवन को स्पष्ट किया। उन्होंने जीवन के इस तत्व को व्यक्त किया कि परमतत्व ही सत्य है और सत्य सगुण तथा निर्गुण दोनों से ही परे है। वह दोनों में ही विद्यमान है। गुण में निर्गुण तथा निर्गुण में गुण है। ईश्वर घर.घर में व्याप्त है। इस परमतत्व की प्राप्ति ही संतों का परम ध्येय हैं। वे देव पूजा, मूर्ति पूजा, अवतारवाद, जाति.भेद, साम्प्रदायिक संकीर्णता आदि के विरोधी थे तथा आचरण की सौम्यता पर विशेष ध्यान देते थे। उन्होंने जीवन के रहस्यवाद को संगीत द्वारा इतने सरल शब्दों में स्पष्ट किया कि निरक्षर लोग भी उसे भली भांति समझकर उस पर आचरण कर सकते थे।

महाकवि तुलसीदास तथा कबीरदास के अतिरिक्त 'अष्टछाप' अथवा 'अष्ट सखाएँ' उत्तर प्रदेश के भक्ति आंदोलन के पुरोधा बने। यह अष्ट सखाएँ अथवा अष्टछाप के कवियाँ आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी के आठ प्रमुख शिष्य.कवि . सूरदास, नन्ददास, चतुर्भुज दास, कुम्भनदास, परमानन्द दास, गोविन्ददास, छीत स्वामी तथा कृष्णदास थे। इन कवियों में कृष्णदास गुजरात में जन्मे थे तथा शेष कवि उत्तर प्रदेश की ही देन है। यह आठ श्रेष्ठ कवियाँ श्रेष्ठ संगीतज्ञ भी थे, जिनके पदों में संगीत के विभिन्न तत्वों की प्राप्ति होती है। संगीत की दृष्टि से सूरदास का 'सूरसागर', नन्ददास का 'रास पंचाध्यायी', परमानन्ददास का 'परमानन्द सागर' और कुम्भनदास के फुटकल पद विशेष महत्वपूर्ण है। अष्टछाप के सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सुप्रसिद्ध कवि सूरदासजी थे। इन्होंने श्रीकृष्ण के जीवन के अनेक पहलुओं पर संगीतमय काव्य लिखे, भक्ति.साधना को ही ईश्वर प्राप्ति का सुलभ साधन माना तथा जनगण को उपासना द्वारा ईश्वर प्राप्ति का मार्ग दिखाया।

उत्तर प्रदेश के भक्ति.संगीत में ब्रजभूमि का विशेष अवदान रहा। ब्रजधाम भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि रही है। लोकनायक श्रीकृष्ण ने ब्रजभूमि को अपनी मधुर लीलाओं का केन्द्र बनाकर इसे गौरवमय बना दिया। यहाँ श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रदर्शन रास के रूप में किया जाता है। निर्म्बाक सम्प्रदाय के अनुयायी, व्यासदेव के शिश्य श्री घमंडदेव को इसका प्रतिस्थापक माना जाता है। रास का मुख्य स्वरूप भगवान श्रीकृष्ण का अनेक गोपियों के साथ एक मण्डली में नृत्य करना है। यद्यपि रास को ब्रज के बहुमुखी लोक.जीवन की सुन्दर अभिव्यक्ति मानी जाती है, इसमें भक्ति का एक अनोखा रूप भी दृश्यमान होता है, जो श्रीकृष्ण और गोपियों के पारस्परिक प्रेम.सम्बन्ध का निष्कर्ष है।

रास के अतिरिक्त कृष्णभक्ति से सम्बन्धित ध्रुपद, धमार आदि गायन शैलियाँ उत्तर प्रदेश के भक्ति.संगीत को ब्रजभूमि की देन है। अष्टछाप के कवियों तथा स्वामी हरिदासजी ने ब्रज में ध्रुपद का अक्षय.भंडार भर दिया। कहा जाता है कि स्वामी हरिदासजी का सुमधुर गायन श्रवण करने का लोभ संवरण सम्राट अकबर भी न कर पाये थे। धमार गायन शैली ध्रुपद की पृष्ठभूमि पर बनी है और इसका सर्वाधिक प्रचार ब्रजभूमि में ही हुआ। इस शैली में वस्तुतः फाग् के अवसर पर श्रीकृष्ण और गोपियों की रासरंग.क्रीड़ा का सरस वर्णन मिलता है। ब्रज के कृष्ण.भक्तों ने अनेक सरस धमार गीतों की रचना की और वर्तमान में भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर भगवान् को रिझाने के लिए ब्रजभूमि की मन्दिरों में उनका गायन होता है।

राजस्थान

राजस्थान के परम्परागत लोक.गीतों से यह ज्ञात होता है कि उनमें पौराणिक देवी.देवताओं की पूजा का विशेष महत्व है तथा इनसे सम्बन्धित गीतों ने भी लोक.गीतों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इन देवी.देवताओं में सर्वाधिक महत्व भगवान विनायकजी को दिया गया है। कोई भी मंगल कार्य करने से पूर्व भगवान् विनायकजी की आराधना की जाती है। विनायकजी के अतिरिक्त जुझारजी, सती माता, दीयाडी माता, शीतला माता, तेजाजी महाराज, देवनारायणजी महाराज, बालाजी अथवा हनुमानजी महाराज आदि देवी.देवताओं की पूजा का गीत यहाँ बड़े आड़म्बर से गाये जाते है। अन्य भक्ति.गीतों में भी भवानी माता, भोमियो, भगोतो सिघ, पितृ पूजा से सम्बन्धित पित्तर, पाबूजी, भाँगड़ली, व गौरी पूजा के गीत .गणगोर, बीजणो, झिलमिल फुलड़ो आदि प्रमुख है। इन गीतों के रचयिता कौन थे, यह ज्ञात नहीं हो पाता। राजस्थान में यह रिवाज रहा है कि राज.घरानों की महिलाएँ गीत.रचना में पूरी रूचि लेती है। उनको संगीत की पर्याप्त जानकारी भी है। विशेष.विशेष अवसरों पर यह विशिष्ट महिलाएँ गीत.रचना करके अपनी प्रतिभा का परिचय देती थी। इसका प्रमाण हमें राजस्थान की जोधपुर रियासत के राठौड़ रत्नसिंह की पुत्री, राव दूदाजी की पौत्री तथा मेवाड़ के महाराणा सांगा की पुत्रवधू मीराबाई के रूप में नजर आता है, जिनके भजनों ने राजस्थान के कोने.कोने में सुर तथा भक्ति का प्लावन प्रवाहित किया।

राजस्थान में 'गणगौर' (अर्थात् माता गौरी) दाम्पत्य जीवन के सुख. वैभव की देवी के रूप में सर्वत्र पूजित है। इनके अतिरिक्त 'होलिका' जो जन. साधारण में हिरण्यकश्यप की बहन के रूप में परिचित है, उन्हें भी यहाँ देवी के रूप

Impact Factor : 1.9508(UIF)

में पूजा जाता है। इन देवियों की पूजा से सम्बन्धित गीतों की संख्या काफी बड़ी है। प्रस्तुत गीत दुर्गा पूजा के दिनों में गाया जाता है, जिसमें देवी दुर्गा हाथ में कमल लिए हुए तथा सिर पर मुकुट धारण किये हुए पर्वत से उतरते हुए प्रकट होते है –

डूँगर से माता जी उतरी
माता हाथ कँवल माथै मोड़,
हिवड़े हरख म्हारै मन रली।

राजस्थान में रात्रि जागरण द्वारा भी जन.जीवन में भक्ति.तत्व का प्रवाह एवं प्रचार होता है। यहाँ रात्रि जागरण के अनेक प्रसंग तथा अवसर है। विवाह, पुत्र जन्म आदि गृहस्थ जीवन की मंगल अवसरों पर व देवी.देवताओं के स्थान विशेष पर महिलायें 'रातीजगा' करके रामदेवजी, पाबूजी, तेजाजी, गोगाजी आदि प्रमुख देवी.देवताओं के मौखिक रूप से प्रचलित जीवन गांथाओं से सम्बन्धित लोक.गीत गाते है। यह परम्परा अत्यंत प्राचीन है। यद्यपि रात्रि जागरण में निर्गुण तथा सगुण दोनों प्रकार की भक्ति से सम्बन्धित भजन गाये जाते है, प्रधानता निर्गुण भक्ति की ही रहती है।

पंजाब

भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के भक्ति.संगीत की भांति पंजाब का भक्ति. संगीत भी गौरवपूर्ण रहा है। सिख धर्म के प्रवर्तक श्री गुरुनानक देवजी द्वारा पूरे पंजाब में धार्मिक संगीत का खूब प्रचार हुआ। गुरुनानक देवजी तथा उनके प्रमुख शिष्य भाई मरदाना ने कीर्तन के माध्यम से सिख धर्म के सिद्धांतों एवं गुरुवाणी का प्रचार किया।

सिख सम्प्रदाय का धार्मिक ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहिब' है, जिसमें गुरुनानकजी से लेकर नौवें गुरु श्री तेगबहादुरजी तक की वाणियों तथा उपदेशों का संकलन किया गया है। सिखों के दसवें गुरु श्री गोविन्दसिंहजी की वाणी इस ग्रन्थ में संकलित नहीं की गई। इनकी समस्त रचनावली इन्हीं के द्वारा रचित 'दशम ग्रन्थ' नामक ग्रन्थ में मिलती है, जिसको 'गुरु ग्रन्थ साहिब' का पूरक कहा जा सकता है। इन ग्रन्थों में जो वाणियाँ संकलित की गई है, उनको 'शबद' कहा जाता है।

'शबद' (शब्द) का शाब्दिक अर्थ ध्वनि, स्वर, आवाज आदि है। गुरु ग्रंथ साहिब में जो शबद संकलित है उनका वास्तविक अर्थ गुरु शबद अथवा गुरु उपदेश माना गया है। गुरु ग्रंथ साहिब की समस्त वाणियाँ गेय है। भारतीय संगीत के इतिहास का पहला पन्ना सामवेद से शुरू होता है। शबद कीर्तन की तुलना पुरातन वैदिक सामगान से की जा सकती है। जिसप्रकार सामगान के गायन निश्चित एवं नियमबद्ध होते थे उसी प्रकार शबद कीर्तन में भी गायन का एक निर्दिष्ट एवं व्यवस्थित शास्त्रीय नियम होता था। सिख धर्म की मान्यतानुसार छंदोमय शबद कीर्तन मोक्ष प्राप्ति का साधन है।

शबद कीर्तनकारियों को कीर्तनियाँ कहा जाता था, जिन्हें केवल रागाधार पर लय.ताल में कीर्तन करना होता था। गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणियों का गायन करनेवालों को 'रागी', रवाब तथा अन्य तारवाले वाद्यों का वादन करनेवालों को 'रवाबी', पखावज अथवा तबला बजानेवालों को 'ढ़ाढ़ी' तथा शबद कीर्तन को साहित्यिक मर्यादा प्रदान करनेवाले व्यक्ति को 'कबीश्वर' कहा जाता था। प्राचीन काल में जिसप्रकार उद्गाता, प्रस्तोता, प्रतिहती आदि ऋक विज्ञोंद्वारा सामगान किया जाता था, उसी प्रकार रागियों, रवाबियों, ढ़ाढ़ियों तथा कबीश्वरों द्वारा शबद कीर्तन किया जाता था। इन चारों में से केवल 'रागी' शब्द ही वर्तमान प्रचलन में है।

गुरु ग्रन्थ साहिब में कुल मिलाकर 31 रागों का प्रयोग माना गया है, जैसे, सिरी, मांझ, गउड़ी, आसा, गुजरी, देवगंधारी, बिहागड़ा, बड़हंस, सोरठ, धनासरी, जैतसरी, टोड़ी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावल, गौड़, रामकलि, नट नारायण, मालीगौड़ा, मारु, तुखारी, केदारा, भैरव, बसंत, सारंग, मल्लार, कानड़ा, कल्याण, प्रभाती और जैजैवन्ती। इनमें से कुछ रागों में शबद अधिक मिलते है तथा कुछ में कम। यहाँ प्रत्येक शबद के साथ प्रयुक्त तालों का भी उल्लेख मिलता है, जैसे, तीनताल, तीव्रा ताल, जैताल, दादरा ताल, पंचम सवारी ताल, छोती सवारी ताल, झपताल, धमार ताल, फिरदोस्त ताल, दीपचंदी ताल, कहरवा (तिलवाड़ा) ताल, बसंत ताल, चौताल, खेमटा ताल, मचताल, सुलताल व इन्द्र ताल।

शबद के अतिरिक्त पंजाब में जयदेव के 'गीत गोविन्द' का भी प्रचलन खूब रहा। पंजाब के निवासियों ने जयदेव के गीतों को बड़े प्रेम से गाया।

महाराष्ट्र

मध्यकाल में महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन को विकसित करने, सुदृढ़ बनाने एवं लोकप्रिय बनाने का श्रेय यहाँ के भक्त.संतों को ही जाता है। महाराष्ट्र में भक्ति.पंथ 'पण्ढरपुर' के मुख्य देवता 'विठोवा' अथवा 'बिट्ठल' के मन्दिर के चर्तुदिक केन्द्रित था। इसीलिए यह भक्ति आंदोलन 'पण्ढरपुर आंदोलन' के रूप में प्रसिद्ध हुआ। महाराष्ट्र में विट्ठल अथवा विठोवा को श्रीकृष्ण के ही एक रूप तथा भगवान् विष्णु का अवतार माना जाता था। भगवान् शिव को भी यहाँ 'पाण्डुरंग' के नाम से पूजा जाता था परंतु विठोवा के बढ़ते लोकप्रियता ने शिवजी के अस्तित्व को क्षीण कर दिया और बीते समय के साथ भक्तों के मध्य पाण्डुरंग और विठोवा के रूप अभिन्न हो गए।

महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन मुख्य रूप से दो सम्प्रदाय में विभक्त था . वारकरी तथा धरकरी सम्प्रदाय। वारकरी सम्प्रदाय पण्ढरपुर के विट्ठल भगवान् के सौम्य भक्तों का सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय के भक्त रहस्यवादी थे। इस सम्प्रदाय के संस्थापक थे संत ज्ञानेश्वर। परवर्ती काल में नामदेव, एकनाथ तथा तुकाराम द्वारा यह सम्प्रदाय विकसित एवं पल्लवित हुआ। संत ज्ञानेश्वर ने महाराष्ट्र के भक्ति आंदोलन को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्होंने मराठी भाषा में श्रीमद्भागवत् पर 'भावार्थ दीपिका' नामक टीका लिखी, जो बाद में 'ज्ञानेश्वरी' नाम से भी प्रसिद्ध हुआ। इन्होंने 'ज्ञानयुक्त' भक्ति की पोशकता की। संत ज्ञानेश्वर के समकालीन नामदेव ने भक्ति के निर्गुण पंथ को अपनाया। वे जाति. भेद व्यवस्था तथा छुआछूत का जोरदार खण्डन करते थे। एकनाथ ने 'ज्ञानेश्वरी' का पहला विश्वसनीय संस्करण प्रकाशित करवाया। इन्होंने मराठी भाषा में 'भावार्थ रामायण' की रचना की। संत ज्ञानेश्वर द्वारा शुरु की गई भक्ति आंदोलन को तुकाराम ने शिखर पर पहुंचाया। इन्होंने निर्गुण ब्रह्मा को स्वीकार किया तथा हिंदू. मुस्लिम एकता पर जोर दिया।

धरकरी सम्प्रदाय के संस्थापक थे समर्थ रामदास। वे अनन्य रामभक्त थे। इन्हें प्रभू श्रीरामचंद्रजी के दर्शन प्राप्त हुए थे, इसीलिए वे स्वयं को 'रामदास' कहते थे। रामभक्ति के अतिरिक्त वे श्रीहनुमान के भी भक्त थे। इन्होंने महाराष्ट्र में हनुमानजी के ग्यारह मन्दिरें भी बनवाई। वे शिवाजी के गुरु थे। कल्याण स्वामी, उद्धव स्वामी, आचार्य गोपालदास, दिनकर स्वामी, अनन्त कवि आदि इनके अनुयायी थे। बीसवी सदीं में नाना धर्माधिकारी, दत्तात्रेय धर्माधिकारी एवं सचिन धर्माधिकारी ने समर्थ रामदासजी के सिद्धांतों का प्रचार किया। अपने रचनाओं के माध्यम से इन्होंने सांसारिक एवं लौकिक जीवन के सुसमन्वय पर जोर दिया। इनके द्वारा रचे गए प्रभु श्रीरामचंद्र की प्रार्थनाएँ 'करुणाष्टक' के नाम से प्रसिद्ध है। 'श्री मनाचे श्लोक' में रामदासजी ने भक्तों के भगवान् के प्रति आचरण व प्रेम का निदेशन किया है .

गणाधीश जो ईश सर्वां गूणांचा
मूलारम्भ आरम्भ तो निर्गूणांचा।।
नमूं शारदा मूल चत्वार वाचा
गमूं पंथ आनन्त या राघवाचा।। (श्री मनाचे श्लोक 01)

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत के भक्ति.संगीत की गांथा बहुत पुरानी है। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन के दो मार्ग बने . शैव और वैष्णव। शैव.पन्थी भक्तों को 'नयनार' कहा जाता था तथा वैष्णवों को 'आलवार'। ईसा 5वी से 7वी सदी के मध्य पल्लवों एवं पाण्ड्यों के शासनकाल में बारह आलवारों तथा तिरसठ नयनारों ने दक्षिण भारत में भक्ति के बीज की पोषण एवं विकास का दायित्व निभाया।

शैव संतो में सर्वप्रथम थे स्त्री.भक्त करैकल् अमैयार, जो सम्भवतः ईसा पांचवी सदी के अंत अथवा छठी सदी के प्रारंभ तक जीवित थी। परंतु शैव भक्तों में सबसे लोकप्रिय एवं प्रमुख थे तीन नयनार . तिरुनवुकरसर अथवा अप्पर, तिरु ज्ञाण सम्बन्दर व सुन्दरमूर्ति (ईसा आठवीं सदी) और माणिक्कवाचकर। माणिक्कवाचकर 'तिरुवसाकम' नामक ग्रंथ के रचयिता थे, जिसमें भगवान् शिव के भजन व गीत है। परंतु वे नयनार नहीं थे। नयनारों द्वारा रचित धार्मिक गीतों को 'तेवरम' कहे जाते थे जो भगवान शिव के आराधना के दौरान मन्दिरों में गाये जाते थे।

दक्षिण भारत के भक्ति के वैष्णव पंथ शैव पंथ के समसामयिक थे। आलवार, जो संख्या में बारह थे, उनके द्वारा रचित पदों को एक साथ 'नालियार दिव्य प्रबंन्धम' कहे जाते थे और मन्दिरों में प्रसंगों के दौरान गाये जाते थे। यह बारह आलवार है . पोरगे आलवार, भूतत्तालवार, मैयालवार, निरुमिशिसे आलवार, नम्मलवार, मधुरकवि आलवार, अण्डाल, कुलशेखरालवार, पेरियालवार, ताण्डरडिप्पोड़ियालवार, तिरुरपाणोलवार और तिरुमगैयालवार। वैष्णव भक्ति के इन उज्ज्वल नक्षत्रों ने भगवान विष्णु तथा उनके अवतारों को विषय बनाकर सुन्दर पदों की रचना की। इन पदों को ही नाथमुनि (ईसा 10वी से 11वी सदीं) ने 'नालियार दिव्य प्रबन्धम' नाम से संकलित किया। इस संकलन में कुल चार हजार पवित्र पदों का समावेश है। यद्यपि सभी वैष्णव भक्त.कवियाँ सम्मानीय थे, अण्डाल को वैष्णव भक्तों में विशेष स्थान प्राप्त था। इसकी वजह न केवल उनका वैष्णवों में एकल स्त्री.भक्त होना था अपितु उनके पदों में हिन्दूओं के वैवाहिक रहस्यवाद की

Impact Factor : 1.9508(UIF)

अभिव्यक्ति भी थी।

परवर्ती काल में इन सभी भक्त.संतों के द्वारा दिखाये गए भक्ति.मार्गों का समावेश हुआ रामानुज एवं माधवाचार्य के दार्शनिक सिद्धांतों में। ईसा बारहवी तथा तेरहवी सदी में वीरशैव आंदोलन एवं विजयनगर साम्राज्य के शासन के दौरान वर्तमान के कर्नाटक प्रदेश में हरिदास आंदोलन की शुरुआत हुई। वीरशैव सम्प्रदाय के सबसे प्रसिद्ध नाम बासवान्ना के थे, जिन्होंने कर्नाटक में स्त्रियो के उत्थान तथा जातिभेद, लिंगभेद रहित एक समाज व्यवस्था की पोशकता की। बीरशैव आंदोलन की भांति हरिदास आंदोलन ने भी भक्ति के एक सशक्त स्रोत को सहस्र जन तक पहुंचाया। हरिदास पंथ में दो भाग हुए . व्यासकूट और दासकूट। व्यासकूट पंथ के भक्तों को वेदों, उपनिशदों एवं अन्य दर्शनों के ज्ञानी होने थे तथा दासकूट पंथियों को केवल माधवाचार्यजी की वाणिओं को सरल कन्नड़ भाषा में जन.जन तक पहुंचाना था। ईसा पंद्रहवी सदी में हरिदास आंदोलन की बागडोर मूलवगल के श्रीपदराय जी के हाथ में आई, परंतु इस आंदोलन को एक संगठित आधार प्रदान किया उनके शिष्य व्यासतीर्थजी ने।

भक्ति आंदोलन के दौरान भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतीय भाषाओं में प्रांतीय काव्य.साहित्य का खूब विकास हुआ। इसी आंदोलन ने आज के कर्नाटक में भगवान विष्णु के आराधना के आधार पर कन्नड़ काव्य.साहित्य को जन्म दिया। कनार्टकी संगीत के प्रमुख संगीतकार पुरन्दरदास एवं कनकदास इस आन्दोलन के पूरोधा थे। पुरन्दरदास को कनार्टकी संगीत के आदिगुरु व पितामह कहा जाता है। उसी प्रकार आंध्रप्रदेश में अनन्य रामभक्त भद्राचल रामदास ने भक्ति.मार्ग को सुपृष्ट किया। कहा जाता है कि उनकी अनन्य रामभक्ति की कारण उन्हें राम साक्षातकार की प्राप्ति हुई थी। परवर्ती काल में वह संत त्यागराज जैसे उच्चकोटि के संगीतकार के लिए प्रेरणा की स्रोत बने।

निष्कर्ष

पिछले सात आठ सदियों में देश भर में, प्रान्त प्रान्त में . कश्मीर से कन्याकुमारी तक . अनेक महान भक्त हुए जिन्होंने अपनी अपनी प्रादेशिक भाषाओं में सैकड़ों पद लिखे और गाये। इस प्रकार के अनेक भक्ति.साधकों के भक्तिमय वाणी से भारतीय संगीत.साहित्य भरपुर है। इनके भक्ति.रस में पगे गीतों को गाते. गाते साधारण लोग भी झुम उठते है और भक्ति.लहरी में अपनी सुध.बुध खो बैठते है। आज भी भक्ति के यह पावन सुर लहरी संतों के पावन मुख से उत्पन्न होकर 'श्रीमद्भागवत गीता' में उल्लिखित भक्ति.योग का मार्ग प्रशस्त कर रही है।

सहायक पुस्तकें

1.सचदेव, डॉ. रेणु – धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत – राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

2.शर्मा, स्वतंत्र – भारतीय संगीत : एक ऐतिहासिक विश्लेषण – टी. एन. भार्गव एण्ड सन्स, इलाहाबाद।

3.देवगोस्वामी, डॉ. केशवानन्द – सत्र संस्कृतिर रूपरेखा – बनलता, डिब्रुगढ़, असम।

4.गुप्ता, डॉ. दीनदयालु – अष्टछाप और बल्लभ सम्प्रदाय – प्रयागः हिंदी साहित्य सम्मेलन।

5.सिंह, वंदना – ब्रज की संगीत परम्परा – राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

6.पेंटल, गीता – पंजाब की संगीत परम्परा – राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

7.शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र – हिंदी साहित्य का इतिहास – नागरी प्रसारिणी सभा, वाराणसी।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net